Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

Original Article

जयशंकर प्रसाद के काव्य एवं नाट्य प्रगीतों में राष्ट्रचेतना की काव्यात्मक अभिव्यक्ति

प्रो. जगदेव कुमार शर्मा
आचार्य एवं अध्यक्ष मानविकी विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, कटवारिया सराय, नई दिल्ली
Email: jagdevkumar68@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171218
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 12(A)
Pp. 91-94
December 2025
Submitted: 16 Nov. 2025
Revised: 26 Nov. 2025
Accepted: 11 Dec. 2025
Published: 31 Dec. 2025

शोध सार

आलेख में छायावाद के प्रमुख स्तंभ जयशंकर प्रसाद के नाट्य-प्रगीतों में निहित राष्ट्रचेतना की काव्यात्मक अभिव्यक्ति का विश्लेषण किया गया है। औपनिवेशिक भारत के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य में प्रसाद का साहित्य राष्ट्रीय आत्मबोध को सशक्त करने का माध्यम बना। उनके नाट्य-प्रगीत केवल नाटकीय सौंदर्य या भावोत्कर्ष तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक गौरव और राष्ट्रीय अस्मिता के संवाहक रूप में उभरते हैं।अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया है कि प्रसाद के नाट्य-प्रगीतों में राष्ट्रचेतना प्रत्यक्ष राजनीतिक घोषणाओं के स्थान पर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, प्रतीकात्मकता और भावात्मक संवेदना के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। ऐतिहासिक पात्रों, वीरता, त्याग और आत्मगौरव जैसे मूल्यों के काव्यात्मक रूपांकन द्वारा राष्ट्रबोध को सुदृढ़ किया गया है। साथ ही, छायावादी सौंदर्यबोध के अंतर्गत भाव और शिल्प का संतुलित संयोजन नाट्य-प्रगीतों को कलात्मक ऊँचाई प्रदान करता है। निष्कर्षतः यह शोध स्पष्ट करता है कि जयशंकर प्रसाद के नाट्य-प्रगीत हिंदी साहित्य में राष्ट्रचेतना की एक विशिष्ट, सूक्ष्म और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं, जो न केवल अपने समय में बल्कि समकालीन संदर्भों में भी प्रासंगिक बनी हुई है।

बीज शब्द : *जयशंकर प्रसाद, नाट्य-प्रगीत, राष्ट्रीय चेतना, काव्यात्मक अभिव्यक्ति, छायावाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, ऐतिहासिक चेतना ।*

मूल आलेख

राष्ट्रीय चेतना आधुनिक हिंदी साहित्य की एक केंद्रीय प्रवृत्ति रही है। विशेषतः औपनिवेशिक काल में साहित्य केवल सौंदर्यबोध का माध्यम न रहकर सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय आत्मबोध की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन बना। छायावाद के प्रमुख स्तंभ जयशंकर प्रसाद ने अपने नाटकों, काव्य और प्रगीतों के माध्यम से भारतीय राष्ट्रीय चेतना को कलात्मक गरिमा प्रदान की। उनके नाट्य-प्रगीत इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखते हैं कि वे मंचीय संदर्भों के भीतर रहते हुए भी राष्ट्रबोध, सांस्कृतिक गौरव और ऐतिहासिक चेतना को काव्यात्मक रूप में व्यक्त करते हैं। जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के ऐसे मूर्धन्य रचनाकार रहे हैं, जिन्होंने हर विधा में अपनी लेखनी चलाई है कविता, नाटक, उपन्यास, कहानियां, निबंध, सभी विधाओं में लिखकर जयशंकर प्रसाद ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। प्रसाद की रचनाओं का विषय कभी एक सा भी नहीं रहा। अलग-अलग विषयों पर लिखकर प्रसाद ने अपनी रचनाओं से जनता में चेतना जगाने की कोशिश की है। किन्तु प्रसाद जी की रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना का स्वर मुखर रूप में मिलता है ।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
प्रो. जगदेव कुमार शर्मा, आचार्य एवं अध्यक्ष मानविकी विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, कटवारिया सराय, नई दिल्ली

How to cite this article:
शर्मा, . जगदेव . कुमार . (2025). जयशंकर प्रसाद के काव्य एवं नाट्य प्रगीतों में राष्ट्रचेतना की काव्यात्मक अभिव्यक्ति. Journal of Research and Development, 17(12(A)), 91–94. https://doi.org/10.5281/zenodo.18184340

Quick Response Code:

Website:
https://jrdrvb.org/

DOI:
10.5281/zenodo.18184340

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

चाहे उनके नाटक हो अथवा कविताएँ हों, और इतना ही नहीं प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना इतनी प्रबल थी कि वे इतिहास की गहराई में जाकर देशवासियों को जागृत करने के लिए वहां से तथ्य उद्घाटित करते हैं। उनके नाटकों एवं कविताओं में कितना भी इतिहास का पुट हो, पर उसका मूल प्रतिपाद्य देशप्रेम एवं राष्ट्रीयता ही रहा है। स्वतंत्रा संग्राम के समय में जब विदेशी शक्तियों ने न केवल राजनीतिक रूप से भारत को हनन करने की कोशिश की बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी भारत की छवि धूमिल करने का प्रयास किया कोशिश कर रहे थे, ऐसे समय में प्रसाद ने अपने देश के विस्तृत अतीत को सामने लाकर देशवासियों में आत्मविश्वास और स्वाभिमान भरने की कोशिश की उन्होंने अंग्रेजों से संघर्ष करने की प्रेरणा दी, प्रसाद अपने प्रारंभिक नाटक विशाख की भूमिका में लिखते है –"इतिहास का अनुशीलन किसी भी जाति का अपना आदर्श संगठित करने के लिए अत्यंत लाभदायक होता है । क्योंकि हमारी दशा को उठाने के लिए हमारे जलवायु के अनुकूल जो हमारी अतीत सभ्यता है, उससे बढकर उपयुक्त और कोई आदर्श हमारे लिए नहीं हो सकता ।"[1]

प्रसाद ने अपनी कृतियों में देश के सांस्कृतिक और राष्ट्रीय गौरव को उस उत्कर्ष तक पहुँचा दिया है, जहाँ पर वो देशवासियों के लिए ही प्रेरक और वन्दनीय नहीं अपितु समस्त विश्व के लिए अभिनंदनीय बन गया है । चन्द्रगुप्त नाटक में कार्नेलिया की यह उक्ति उन विदेशियों के लिए मुंहतोड़ जबाब है, जो इसे अर्द्धसभ्यों का देश घोषित करते नहीं थकते ।कार्नेलिया कहती है- "यह स्वप्नों का देश, यह त्याग और ज्ञान-पालना यह प्रेम की रंगभूमि-भारत भूमि क्या भुलाई जा सकती है ? कदापि नहीं, अन्य देश-मनुष्यों की जन्मभूमि है, यह भारत मानवता की जन्मभूमि है ।"[2] नाट्य-प्रगीत मूलतः नाटक के भीतर प्रयुक्त वे गीत हैं जो कथानक को आगे बढ़ाने के साथ-साथ भावात्मक और वैचारिक संवेदना को भी गहन बनाते हैं। जयशंकर प्रसाद के नाट्य-प्रगीत केवल दृश्य-सौंदर्य या भावोत्कर्ष तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे राष्ट्रीय चेतना के सूक्ष्म और व्यापक दोनों स्तरों को अभिव्यक्त करते हैं। इनमें गीतात्मकता, लयात्मकता और प्रतीकात्मकता के माध्यम से राष्ट्र की आत्मा को स्वर दिया गया है। प्रसाद के हर एक काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर गहरे पैठे हुए दिखते हैं । उनके काव्य संग्रह चित्राधार में संकलित कथामूलक भाव वाली कविताओं में प्रेम राज्य, विजयनगर, और अहमदाबाद के बीच हुए तालीकोट युद्ध की ऐतिहासिक घटना को केंद्र में रखकर लिखा गया वीरता परक गीत है । विजय नगर नरेश महाराज सुर्यकेतु को भील राज को देकर युद्ध में जाते हैं, और अपने शौर्य से यवन-सेना को परास्त करने के बाद अपने ही सेनापति द्वारा धोखे से मारे जाने पर वीरगति प्राप्त करते हैं । प्रथम हिस्से में प्रसाद राष्ट्रीय भावना को स्थापित करते हैं । महाराणा का महत्त्व प्रसाद का एतिहसिक काव्य है । महाराणा हिन्दू आत्मविश्वास, स्वातंत्र्य भावना, देशभक्ति विदेशी शक्ति के विरुद्ध संघर्ष के प्रतीक हैं । यह काव्य स्वाधीनता प्रेम, पराधीनता के खिलाफ संघर्ष, शौर्य एवं संकल्प की कविता है । "मसि मुख से ले अहो लेखनी क्या लिखे ! उस पवित्र प्रातः स्मरणीय सुनाम को । नहीं, नहीं, होगी पवित्र यह लेखनी लिखकर स्वर्णाक्षर में नाम प्रताप का ।"[3] इतना ही नहीं प्रसाद इस नाम के स्मरण की सलाह भी देते हैं - "कर अपने प्रताप को विस्मृत सो गए अरे कृतघ्न बनो मत उसको भूल के यह महत्वमय नाम स्मरण करते रहो ।"[4]

जयशंकर प्रसाद ने इस काव्य में खान-खाना की वीरता और देशभक्ति के प्रति पूज्यभाव को प्रताप के समान स्तर पर रखकर अद्भुत कलानुशासन का परिचय दिया है । राणाप्रताप के व्यक्तित्व के बारे में जो कहते हैं, उससे रहीम का व्यक्तित्व सामान धर्म हो जाता है । प्रसाद का उद्येश्य वस्तुतः भारत महिमा का गान एवं देशभक्त स्वाभिमानी, वीर महाराणा प्रताप के बहाने पाठकों में देशभक्ति जगाना है । कानन-कुसुम में भारत कविता का उद्देश्य भारत महिमा का गान और स्वदेश के प्रति प्रेम का प्रदर्शन है। प्रारम्भ की दो पंक्तियाँ विशेष महत्वपूर्ण है - 'हिमगिरी का उत्तुंग शिखर है सामने, खड़ा बताता है भारत के गर्व को, पड़ती इस पर जब माला रवि रश्मि की, मणिमय हो जाता है नवल प्रभात में ।'[5] औरंगजेब द्वारा वीर बालक जोरावर और फतेहसिंह के दिवार मे चुनवाने की कथा पर आधारित है । इस घटना का प्रयोग कवि ने जागरण के लिए किया है । जो नवयुवकों को साहस, संकल्प और आत्मबलिदान की प्रेरणा देता है - "राक्षस से रक्षा करने को धर्म की, प्रभु पाताल जा रहे हैं युग्मूर्ति से, अथवा जिनकी नाल नहीं दिखला रही, ऐसे दो स्थलपद्म खिले सानंद हैं, ईंटों से चुन दिए गए आकंठ वे, बार-बराबर भी न भाल पर पड़ा, जोरावर ओ फतेसिंह के धन्य हैं जनक और जननी इनकी यह भूमि भी ।"[6] 'पेशोला की प्रतिध्वनि' स्वतंत्रता की रक्षा के लिए कटिबद्ध राणाप्रताप के मेवाड़ की पुकार है । मेवाड़ की यह पुकार प्रकारांतर से भारतमाता की ही पुकार है ।प्रसाद की एक अन्य कविता है, 'प्रलय की छाया' इसमें कवि ने एक रूपगर्विता नारी के अंतःकरण में उत्पन्न भावों के संघर्ष का अत्यंत मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है ।एक रमणी के हृदय में क्षण-क्षण परिवर्तित होने वाली भावनाओं की दृश्यावली सर्वथा प्रशंसनीय है और अंतर्द्वंद्व के कुशल चितेरे प्रसाद ने ऐतिहासिक घटना को काव्यरूप देकर एक अत्यंत सराहनीय कार्य किया है - "रूप यह देखे हो तू रूप का पति मेरा भी, यह सौन्दर्य देखे, यह मृत्यु भी कितनी महान और कितनी अभूतपूर्व ?वन्दनीय मै बैठी रही, देखती थी दिल्ली कैसी विभव विलासिनी, यह छलना, सजने लगी थी संध्या में ।'[7] प्रसाद का सबसे चर्चित महाकाव्य कामायनी में भी

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

राष्ट्रीयता एवं सामाजिकता के स्वर मुखर हुए हैं ।सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में भी जब तक समरसता नहीं आती तब तक एक समाज दूसरे को तुच्छ एवं हेय समझता रहता है और एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को दबाकर अपना प्रभुत्व स्थापित करने की आकांक्षा में बर्बरता एवं क्रूरता के कार्य करता रहता है । इसी विषमता के फलस्वरूप राष्ट्रों में विविध वर्ग बन जाते हैं, विविध अधिकारों की सृष्टि होती है और भेदभाव इतना बढ़ जाता है कि सामाजिक जीवन बड़ा ही कष्टमय व्यतीत होता है ।इसी सामाजिक एवं राष्ट्रीय विषमता के कारण सारस्वत प्रदेश में संघर्ष उठ खड़ा हुआ था ।अतः उसी सारस्वत प्रदेश को सुख समृद्धि की ओर अग्रसर करने के लिए श्रद्धा ने सामाजिक एवं राष्ट्रीय समरसता का प्रचार करने की प्रेरणा अपने पुत्र को प्रदान करती है – 'सबकी समरसता का कर प्रचार मेरे सुत सुन माँ की पुकार'[8] जयशंकर प्रसाद हिंदी के ऐसे सहित्यकार हैं, जिन्होंने अपने नाटकों में गीतों का प्रयोग किया है ।और यह काम प्रसाद ने लगभग सभी नाटकों में किया है ।और उनके नाट्यप्रगीतों में राष्ट्रप्रेम, की अनुगूंज सुनाई देती है और साथ ही उसमें देश की सभ्यता एवं संस्कृति का चित्रण भी देखने को मिलता है। प्रसाद ने अपने काव्य नाटकों में देश के सांस्कृतिक और राष्ट्रीय गौरव को उस ऊँचाई तक पहुँचाया है, जहाँ वे मात्र देशवासियों के लिए ही प्रेरक और वन्दनीय नहीं अपितु समस्त विश्व के लिए अभिनंदनीय बन गए हैं ।चन्द्रगुप्त नाटक में कर्नेलिया द्वारा गाया हुआ यह गीत इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है –

अरुण यह मधुमय देश हमारा !
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा ।
सरस तामरस गर्भ-विभा पर-नाच रही तरुशिखा मनोहर ।
छिटका जीवन हरियाली पर-मंगल कुंकुम सारा ।
लघु सुरधनु से पंख पसारे-शीतल मलय समीर सिहारे ।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किये समझ नीड निज न्यारा ।
मंदिर ऊंघते रहते जब-जब कर रजनी भर तारा ।'[9]

वस्तुतः कार्नेलिया द्वारा गाया यह गीत प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना को ही उजागर करता है। प्रसाद ने अपने काव्य एवं नाट्य प्रगीतों में राष्ट्रप्रेम एवं संस्कृति को अधिक भावात्मक एवं मूर्त रूप प्रदान कर उसे अधिक ग्राह्य बनाने की कोशिश की है ।प्रसाद के नाट्य प्रगीतों में देश के नैसर्गिक सौन्दर्य का आकलन, अतीत गौरव का गायन और आत्म बलिदान की प्रेरणा का स्वर मुखरित है ।राष्ट्रीय चेतना के भाव को जगाने वाला यह गीत दृष्टव्य है –

'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला
स्वतंत्रता पुकारती
.....
अराती सैन्य सिन्धु में- सुवाडवाग्नी से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो-बढ़े चलो-बढ़े चलो !'[10]

प्रसाद का एक अत्यंत प्रसिद्ध नाटक है, स्कंदगुप्त, इस नाटक में भी प्रसाद ने गीतों का समावेश करके इसे भी राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत किया है इसमें प्रसाद ने भारतीय संस्कृति का गौरव गान किया है कि भारत देश की महिमा क्या है ? उसके पास क्या-क्या धरोहर है साथ ही प्रकृति ने हमारे भारत को क्या-क्या दिया है इसका भी बड़ा मनोहर चित्रण किया है –

हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार
उषा ने हँस अभिनन्दन किया और पहनाया हीरक हार
जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक
व्योम तम पुंज हुआ नष्ट, अखिल संस्कृति हो उठी अशोक ।
.....
वही है रक्त,वही है देश,वही साहस है वैसा ही ज्ञान
वही है शांति वही है शक्ति वही हम दिव्य आर्य संतान

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

जिए तो सदा उसी के लिए, वही अभिमान रहे,यह हर्ष,
निछावर कर दे हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारत वर्ष ।'[11]

जयशंकर प्रसाद की राष्ट्रचेतना राजनीतिक नारेबाजी से भिन्न सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर आधारित है। उनके नाट्य-प्रगीतों में भारत की सांस्कृतिक परंपराएँ, दर्शन, जीवन-मूल्य और आध्यात्मिक चेतना राष्ट्र की आत्मा के रूप में उपस्थित हैं। भाषा की संस्कृतनिष्ठता, पौराणिक और ऐतिहासिक प्रतीकों का प्रयोग तथा उदात्त भावभूमि ये सभी तत्व मिलकर राष्ट्रचेतना को एक सांस्कृतिक गरिमा प्रदान करते हैं। प्रसाद का साहित्य देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत है, उनमे राष्ट्रीय चेतना का स्वर हमें देखने को मिलता है । विशेष रूप से उनके नाट्यप्रगीतों में देश के प्रति प्रेम एवं जन-जन में राष्ट्रभक्ति की भावना जगाने की बात हमें दिखाई देती है साथ ही अपने अतीत के प्रति गौरव एवं लोगों को अतीत का ज्ञान कराना प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना की महत्वपूर्ण विशेषता रही है । प्रसाद ने अपने गीतों के माध्यम से लोगों में एक साहस का संचार करने की कोशिश की है और विभिन्न पात्रों के माध्यम से गीतों में भारत वर्ष का गुण-गान किया है। यह बात प्रसाद की देशभक्ति की भावना को स्वयमेव सिद्ध करती है । जयशंकर प्रसाद के नाट्य-प्रगीतों में राष्ट्रचेतना की अभिव्यक्ति अत्यंत सूक्ष्म, कलात्मक और सांस्कृतिक है। उन्होंने गीतों के माध्यम से राष्ट्र को एक जीवंत चेतना के रूप में प्रस्तुत किया जिसमें इतिहास, संस्कृति, शौर्य और आत्मगौरव समाहित हैं। उनके नाट्य-प्रगीत हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना की काव्यात्मक अभिव्यक्ति के श्रेष्ठ उदाहरण हैं और आज भी भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रबोध को समझने के लिए प्रासंगिक बने हुए हैं।

सन्दर्भ

1. विशाख, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ संख्या, 3
2. चन्द्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ संख्या, 34
3. महाराणा का महत्त्व, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ संख्या, 6
4. वही, पृष्ठ संख्या, 8
5. कानन-कुसुम, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ संख्या, 25
6. प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य, सत्य प्रकाश मिश्र, पृष्ठ संख्या, 28
7. वही, पृष्ठ संख्या, 38
8. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ संख्या, 42
9. चन्द्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ संख्या, 54
10. वही, पृष्ठ संख्या, 60
11. स्कंदगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ संख्या, 44